महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा की

पी-एच.डी [हिन्दी] उपाधि हेतु प्रस्तावित शोधप्रबंध की रूपरेखा

[Synopsis]

विषय

“नारी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में नीरजा माधव का कथा साहित्य: एक अध्ययन”

अनुसंधित्सु

सुनील कुमार यादव

शोध छात्र, हिन्दी विभाग

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

निर्देशक

डॉ. मनीषा ठक्कर

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

2023

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा

पी-एच. डी. [हिन्दी] उपाधि हेतु प्रस्तावित शोधप्रबंध की रूपरेखा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में समरसता ही समाज का आधार है। किसी भी समाज में सबसे संवेदनशील वर्ग लेखकों का होता है। साहित्यकार भाव-प्रवण होते हैं। उनका हृदय साहित्यिक चेतना, भावनाओं और विचारो से भरा होता है। अधिकतर भावों की अभिव्यक्ति में कविता निकलती है , विचारों की अभिव्यक्ति से गद्य साहित्य का निर्माण होता है। नारी ही है जो परिवार या देश को आधार देती है। सृजन का कार्य करती है। परिवार से मिलकर समाज बनता है और अच्छा समाज एक अच्छे देश का आधार होता है। किसी भी देश की तरक्की का आधार वहाँ की स्त्रियां भी होती हैं। बिना स्त्रियों के जागरूक और शिक्षित हुए किसी भी देश का स्तर ऊपर नहीं हो सकता है क्योंकि देश के विकास का स्तंभ वहाँ की जनसंख्या और युवा वर्ग होता है। देश - विदेश का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट है कि जिस देश की औरतें शिक्षित व आधुनिक सोच वाली होती है, वह देश निश्चय ही विकसित है। क्योंकि औरतों की जनसंख्या हर देश में आधी होती है। औरत एक ऐसा संसार है, जहाँ सभ्यता एवं संस्कृति का सम्मान व संरक्षण पुरुषो की तुलना में ज्यादा होता है। यदि विश्व को सलीके

से विकास करना है तो नारी जगत को महत्व देना चाहिए, क्योंकि स्त्री ही वह बंधन है , जिससे बँधकर परिवार, समाज व देश अपनी प्रगति कर सकता है ।

स्त्री विमर्श का सीधा अर्थ मातृत्व, शिशु पालन, परिवार सहित सभी संस्थाओं व सामाजिक गतिविधियों में स्त्री को समान स्थान देने से है । मेरा शोधप्रबंध स्त्री विमर्श पर है । स्त्री के साथ भेदभाव सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक आदि स्तर पर नहीं होना चाहिए । इसका आशय यह है कि लिंग के आधार पर स्त्री के साथ भेदभाव न करने की वकालत ही स्त्री विमर्श है। साहित्य में स्त्री विमर्श का अर्थ है कि स्त्री को पुरुषों के समान स्थान देना, चिंतन करना ।

पहले के साहित्य में पुरुषों का ही बाहुल्य हुआ करता था, रचनाकार स्त्रियों पर अपने भाव या विचार लिखने से परहेज करते थे । 40 वर्षों के पहले का हिंदी साहित्य देखें तो उसमें महिला रचनाकारों की संख्या बहुत ही कम मिलती है । हिंदी साहित्य में यदि देखें तो आदिकाल में किसी भी कवित्री का नाम तक नहीं मिलता । परंतु बहुत शोधों के बाद धीरे-धीरे एक-दो नाम मिलते हैं, तो उनकी रचनाएँ न के बराबर हैं । उसके बाद यदि भक्तिकाल का अवलोकन करें तो वैचारिकता के मामले में भक्तिकाल में विविधता मिलती है । परंतु सिर्फ कृष्ण भक्ति शाखा में एक कवित्री के अलावा कोई चर्चित नाम नहीं मिलता है । भक्तिकाल में विचार और भाषा में काफी विविधता व स्वतंत्रता देखने को मिलती है । उत्तर मध्यकाल या रीतिकाल में देखें तो यह काल में स्त्री रचनाकार नदारद ही दिखते हैं । ऐसा इसलिए भी कि राजनीतिक रूप से समय सही नहीं था और स्त्रियों के लिए तो निश्चय ही सबसे बुरा दौर रीतिकाल का रहा है । अंत में हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में देखें और छायावाद में एक नाम छोड़ दे तो प्रयोगवाद तक कोई महत्वपूर्ण महिला रचनाकार का नाम लक्षित नहीं होता

है। इस संबंध में यह कहा जा सकता है कि धीरे-धीरे हिंदी साहित्य की रचनाओं में स्त्रियों को शामिल किया जाने लगा था। जैसे गद्य विधाओं में स्त्री को लेकर सामान्य मुद्दों पर बात दिखने लगी थी। आधुनिक काल में प्रसिद्ध ऐतिहासिक व धार्मिक नारियों को लेकर स्वतंत्र रचना होने लगी थी। भारतेन्दु व द्विवेदी युग के आसपास कुछ रचनाएँ ऐसी मिल जाती हैं, जो इतिवृत्तात्मक भी हैं और किसी धार्मिक नारी पात्र को लेकर स्वतंत्र रूप से की गई है। उपन्यास कहानी में प्रेमचंद के आसपास के समय काल में स्त्री संबंधी चिंतन साहित्य में मिलना प्रारंभ होता है, परंतु उस समय सबसे ज्यादा अभाव महिला रचनाकारों का था। महादेवी वर्मा ही महिला रचनाकारों में एक बड़ा नाम था जो गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लेखन कर रही थी। स्त्री विमर्श के प्रारंभिक लेखन में महादेवी वर्माजी एक मील का पत्थर मानी जाती है। क्योंकि नारी विमर्श की बात सीधे तौर पर इन्हीं के द्वारा सर्वप्रथम उठाई गई थी, उसके बाद तो धीरे-धीरे स्त्री विमर्श पर लेखन प्रारंभ हुआ। स्त्री चिंतन प्रभुत्व रूप से साहित्य में लाने का श्रेय पुरुषों को जाता है। साहित्य की सभी विधाओं में पुरुषों द्वारा स्त्रीमुक्ति पर लेखन खूब हुआ, फिर साहित्य में धीरे-धीरे स्त्रियों के द्वारा लेखन कार्य प्रारंभ हो गया। स्त्रियों द्वारा लेखन कार्य बहुत ही गंभीर तरीके से हो रहा है। वर्तमान काल में महिला व पुरुष रचनाकारों द्वारा पूर्ण प्रभुत्व के साथ साहित्य की सभी विधाओं में लेखन कार्य हो रहा है। जो कि स्त्री विमर्श के लिए अत्यंत गौरव की बात है।

स्त्री विमर्श की आवश्यकता है क्योंकि लिंग के आधार पर समाज के दो भाग हो जाते हैं। परंतु दोनों के साथ न्याय नहीं होता है। इसी लिंग आधारित अन्याय को तोड़ने के लिए स्त्री विमर्श की आवश्यकता इसलिए भी है कि समाज में स्त्री की दलित जैसी दयनीय स्थिति हो गई है। इसीलिए दोनों विमर्श समानांतर चल रहे हैं जिससे समाज में समरसता स्थापित हो। स्त्री विमर्श सिर्फ स्त्रियों की समानता स्वतंत्रता अस्मिता के लिए नहीं है, बल्कि

सदियों से चले आ रहे पितृसत्तात्मक पक्षपाती दृष्टिकोण को लिंग के नाम पर रूढ़िवादी अवधारणा को समीक्षा का अवसर भी देता है। स्त्री विमर्श सदियों से चले आ रहे पितृक मूल्यों और मापकों को नए परिपेक्ष में देखने व सुधार करने का एक अवसर भी है। स्त्री विमर्श के माध्यम से रूढ़िवादी पारिवारिक व्यवस्था की कमियों को देखने का एक नया दृष्टिकोण मिलता है क्योंकि अधिकतर स्त्रियों का शोषण पुरुषवादी मूल्य व्यवस्था ने ही किया है। घर परिवार में स्त्रियों की समस्या है की समस्त जीवन शैली पुरुष ही निश्चित करता है। यहाँ तक कि उसके अधिकार, शिक्षा, रहन-सहन आदि को भी एक निश्चित परिधि तक ही सीमित कर दिया जाता है।

स्त्री विमर्श के माध्यम से आज के परिपेक्ष में नारी अपने अधिकार व अस्तित्व के प्रति जागरूक होगी और साथ ही साथ पितृसत्तात्मक समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन होगा। आधुनिक युग महिला सशक्तिकरण का युग है ऐसा सिर्फ भारत देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में हो रहा है। क्योंकि देश के विकास में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी आवश्यक हो गई है। विश्व के सभी विद्वानों को यह पता है कि जब पूर्ण जनसंख्या देश के संसाधनों के साथ सक्रिय भागीदारी करेगी तभी राष्ट्र व विश्व का सर्वांगीण विकास हो सकता है। भारत में महिलाओं की स्थिति के अध्ययन से पूर्ण हमारे मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार के प्रश्न बनते हैं। महिला सशक्तिकरण के संबंध में देश व समय का बहुत महत्व होता है। जैसे यदि किसी विकसित देश व किसी विकासशील देश की महिलाओं के जीवन स्तर की तुलना करें तो दोनों का अलग-अलग धरातल है। एक देश की योजना दूसरे देश में कारगर नहीं हो सकती है। परंतु यह बात सत्य है कि स्त्री भारत देश की हो या अन्य किसी देश की, गरीब हो या संभ्रांत परिवार की उसका शोषण सभी स्तर पर होता है। सिर्फ सभी के धरातल भिन्न होते हैं। स्त्री के प्रति सदियों से समाज की जो मानसिकता है वह निश्चय ही अन्याय पूर्ण है। वे भी पुरुषों के साथ समान अधिकार चाहती हैं। इस समानता व स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए सिर्फ

स्त्रियों को शिक्षित व जागरूक करने की ही नही, बल्कि समस्त समाज की पितृसत्तात्मक मानसिकता को बदलने की भी आवश्यकता है। तभी परिवार, समाज व देश का सर्वांगीण विकास संभव है।

इसके लिए देश में हर तरह से जागरूकता फैलाई जा रही है। सरकार के द्वारा भी असमानता दूर करने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। भारत में आजादी के उपरांत कुछ समय बाद ही महिलाओं को सामान्य नागरिकता का अधिकार मिल गया था। मतदान करने के साथ-साथ चुनाव भी लड़ने का अधिकार मिल गया। भारतीय स्त्रियों की परिस्थिति सुधारने में भारत के राजनेताओं व समाज सुधारकों का अमूल्य योगदान रहा है। समाज सुधारक यह पहचान गए थे कि महिला शिक्षा को बढ़ावा उनकी व समाज की दशा सुधारने के लिए बहुत आवश्यक है। भारत में ऐसी ही कुछ विभूतियाँ हैं जिन्होंने स्त्रीशिक्षा व स्त्रियों के विकास के लिए पूरा जीवन लगा दिया । उनका मानना था कि स्त्रियों की प्रगति की बाधा को समाज को ही दूर करना चाहिए। समाज में स्त्री पुरुष बराबर हैं, दोनों को बराबर अधिकार मिले। नेताओं और समाज सुधारकों के साथ-साथ तत्कालीन महिला संगठनों के सार्थक प्रयासो से नारियों की शिक्षा सुधार में बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ा। पुरानी रूढियों व परंपराओं के बंधन से नारी मुक्त होने लगी। शिक्षित होने के बाद जो नारी सिर्फ घर में सीमित रहने वाली थी उसका आयाम व मानसिकता बढ़ने लगे। वह जागरूक होने लगी। अपने अस्तित्व व अधिकार को पहचानने लगी एवं उन्हें प्राप्त करने का जतन भी करने लगी।

वर्तमान समय में नारी वर्ग आज भी 33% आरक्षण से संतुष्ट नहीं है। उसे पुरुषों के बराबर 50% का अधिकार चाहिए। महिला द्वारा पुरुषों के बराबर अवसर की प्राप्ति की मांग की बात करने का निहितार्थ यही है शिक्षा के माध्यम से वह तर्कशील व जागरूक हो गई है। स्त्रियां अपने कर्तव्यों को लेकर भी गंभीर रही हैं उन्हें सिर्फ अपने अधिकारों का ही खयाल नहीं है। एक शिक्षित महिला ही अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों में सामंजस्य रख सकती है। स्त्री ने भी समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व पूर्ण किया है। डॉक्टर, वकालत, पुलिस इंस्पेक्टर, इंजीनियर, पायलट, अध्यापक, राजनीत आदि हर क्षेत्रों में अपने कर्तव्य पालन को दिखाकर उसने समाज के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की है। नारी सिर्फ व्यक्तिगत कार्य में ही सफल नहीं हो रही है, बल्कि राष्ट्रकर्म में भी पुरुषों की तरह ही हर कार्य में सहभागी बनके यह दिखा दिया है कि नारी अपने देश के लिए अपने आप को समर्पित भी कर सकती है। वह देशभक्ति के कार्य दृढ़ निश्चय और शालीनता के साथ कर सकती है। समाज सुधारकों, सरकार व संविधान के माध्यम से नारी के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए जो प्रयास हुए हैं वह प्रयास सार्थक सिद्ध हुए हैं। सरोजिनी नायडू दांडी अभियान की प्रमुख सेनानी थी। स्वर्गीय इंदिरा जी प्रथम महिला प्रधानमंत्री व प्रतिभा देवी पाटिल प्रथम राष्ट्रपति बने। सुचेता कृपलानी ने भी राजनीतिज्ञ व स्वतंत्रता सेनानी बन देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहीं से स्त्रियों में आमूल सुधार का विश्वास पैदा हुआ। शिक्षा से नारीयों में कुछ कर दिखाने का विश्वास पैदा हुआ। नारी घर की देवी या गृहलक्ष्मी के पूर्वाग्रह से बाहर निकलकर व मातृत्व ही स्त्रीत्व की पूर्णता के मानक से आगे बढ़ने लगी। उसके लिए अब समाज व राजनीति में

पुरुषों के साथ समानता की भागीदारी होने लगी। वर्तमान समय में अपनी क्षमता के बल पर हर क्षेत्र में पुरुष से कमतर न ठहरकर वह अपनी शक्ति का बराबर परिचय देती है। स्त्रियों के शिक्षित व समृद्ध होने पर उसकी अपनी मानसिकता में सकारात्मक परिवर्तन आया है। वे अपने अधिकार व अस्तित्व को लेकर जागरूक हो गई हैं। वे अपने ऊपर होने वाले अन्याय व अधर्म का प्रतिकार संगठित होकर करती है। कभी नारी शिक्षा प्रसार, कभी नारी संगठन, कभी नारी मुक्ति आंदोलन तो कभी नेताओं व समाज की विभूतियों के माध्यम से नारी अपनी बहुमुखी प्रतिभाशीलता का परिचय देती रहती है। नारियों के बढ़ते आयाम मैं साहित्य भी अछूता नहीं रहा है। हिंदी साहित्य की सभी विधाओं जैसे कि उपन्यास, निबंध ,नाटक, एकांकी, आत्मकथा, जीवनी संस्मरण, पत्रकारिता, व्यंग, रेखाचित्र, कविता, गज़ल आदि में अपनी संवेदनाओं को उसने अभिव्यक्त किया है ।

साहित्य के क्षेत्र को अनेकानेक महिला कथाकारों ने अपनी रचनात्मकता व लेखन कौशल से समृद्ध किया है। कथा साहित्य में जीवन की सच्चाई को प्रतिबिंबित किया जाता है। वह बदलते समय के साथ बदलते मानवीय संबंधों की पड़ताल करता है। उपन्यास व कहानी के द्वारा व्यक्त समाज व आपसी संबंधो को ज्यादा गहराई व प्रमाणिकता के साथ समझता है। पाठकों को यह यथार्थ भी लगता है। रचनाकार द्वारा परिवेश के प्रति वास्तविक अनुभूति और पाठकों तक संप्रेषण कला से कथा साहित्य में संवेदना और मिजाज को उच्च स्तर पर पहुंचा दिया है।

वर्तमान समय की महिला लेखिकाओं ने कथासाहित्य के स्वरूप और शिल्प को नया संदर्भ देकर समय के साथ गतिशील किया हुआ है। साहित्य में व्यक्त की हुई मानसिकता, तनाव समस्या, संवेदना, दुःख, प्रसन्नता आदि को आज के परिवेश व कल्पना के यथार्थ धरातल पर यथार्थपरक चित्रण मिलता है।

हिंदी साहित्य में भी दुनिया के तमाम साहित्य की तरह स्त्रियों ने अभिव्यक्ति के लिए गाना और लिखना शुरू किया था। एक दौर ऐसा भी रहा है जब हमारे यहाँ स्त्रियों को लेखक का दर्जा नहीं मिल पा रहा था, फिर धीरे-धीरे स्थित बदली और तब से यह सिलसिला अपनी निरंतरता में चलता रहा है। जिसका परिणाम आज के हिंदी साहित्य का समृद्ध आयाम है। जब हम भारतीय महिला की बात करते है तो एक गौरव की अनुभूति होती है। हमारे राष्ट्र, समाज और साहित्य में महिला का स्थान हमेशा ही ऊँचा रहता है। जन्मदात्री होने के कारण नारी जननी है जीवन भर का साथ निभाने के कारण सहचारिणी है। धर्म कार्यों में उनका साथ अनिवार्य होने के कारण से सहधर्मिणी है, घर को संभालने के कारण गृहलक्ष्मी है धार्मिक क्षेत्र में नारी प्रकृति व माया मानी जाती है। इतिहास के कुछ कालखंड को छोड़ दें तो नारी का गौरव कायम ही रहा है।

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महिलाएँ सामाजिक सेवा, प्रशासनिक सेवा सामान्य रोजगार, चिकित्सा आदि कई क्षेत्रो में आज भी पुरुषों की तरह भागीदारी दे रही हैं। साथ ही महिला संगठनों की संख्या के साथ उनका महत्व भी बढ़ता जा रहा है। पंचायती राज्य संबंधी संविधान संशोधन से बड़ी संख्या में महिलाएं जनप्रतिनिधि का भी दर्जा प्राप्त कर

रही हैं। आमतौर पर महिलाओं की पढ़ाई, नौकरी व शादी संबंधी धारणाओं में सकारात्मक परिवर्तन आना प्रारंभ हो गया है। अतः इस तरह के अपेक्षित परिवर्तन देश व समाज के लिए गौरव की बात है। परंतु इसी के साथ देश व समाज में बलात्कार, शोषण, तलाक, महिला उत्पीड़न व महिला अपराध की घटनाएँ भी तेजी से बढ़ती जा रही हैं। यह हमारे समाज का निश्चित ही विरोधाभास है। जिस समाज में महिलाओं की भूमिका बढ़ रही है, उसी के साथ साथ देश व समाज में स्त्रीयों के तिरस्कार, शोषण व अपमान की घटनाएँ अक्सर सुनने को मिलती हैं। इस विडंबना पूर्ण स्थिति पर यदि विचार करें तो इसके पीछे सदियों से चली आ रही पितृसत्तात्मक मानसिकता ही है। जो उन सभी स्त्री-पुरुष के मस्तिष्क में रच बस गई है। समाज की मानसिकता में परिवर्तन उस अनुपात में नहीं हो पाया है, जैसा कि अपेक्षित है। पुरुषवादी मानसिकता सिर्फ पुरुषों में ही नहीं बल्कि स्त्रियों भी पाई जाती है। इस सोच में परिवर्तन शिक्षा व जागरूकता के साथ धीरे-धीरे हो रहा है।

जैसे राष्ट्रीय स्तर पर स्त्रियों की सहभागिता के संदर्भ में देखें तो केरल में स्थित शबरीबाला मंदिर जहां 10 से 50 वर्ष की उम्र की महिलाओं ने मंदिर में प्रवेश करके अपने भगवान अयप्पा की पूजा- अर्चना में कामयाबी पाई। उनकी यह कामयाबी सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर मिल पाई। इसी तरह महाराष्ट्र में शनि शिंगणापुर मंदिर में पिछले 400 वर्षों से अधिक समय से महिलाओं के प्रवेश पर रोक लगी थी , पर वहां भी हाईकोर्ट के आदेश पर महिलाओं को प्रवेश मिला। धार्मिक व सार्वजनिक स्थल पर स्त्रियों का प्रवेश वर्जित होना समाज की पितृसत्तात्मक मानसिकता का ही द्योतक है। इसी तरह तीन तलाक का मुद्दा है।

जिसमें सरकार द्वारा लाए गए लैंगिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए लाये गए विधेयक का समर्थन न करके संसद ने पुरातनवादी मानसिकता का परिचय दिया। समाज व देश में इस तरह की घटनाओं से प्रतीत होता है कि वर्तमान समय में महिलाएं भले ही सभी क्षेत्रों में प्रभुत्व स्थापित कर रही हो, परंतु कुछ घटनाएँ ऐसी हो रही हैं जिससे पता चलता है कि समाज व परिवार के सभी वर्गों की मानसिकता में अपेक्षित परिवर्तन नहीं हो पा रहा है। निश्चय ही समाज, सरकार व संविधान सभी के प्रयास से एवं शिक्षा व जागरूकता से स्त्रियों की परिस्थिति के साथ-साथ समाज की मानसिकता भी जरूर बदलेगी।

इस संदर्भ में बात करें तो हिंदी साहित्य भी पीछे नहीं है, वर्तमान प्रगतिशील युग में हिंदी साहित्य में पुरुष रचनाकार के अलावा लेखिकाओं का एक बड़ा वर्ग भी सार्थक लेखन कर रहा है। इसमें प्रमुख रूप से चंदकिरण सोनरिक्शा , शांति मेहरोत्रा, सूर्यबाला, मेहरुन्निसा परवेज, इंदुबाली, अचला नागर, शशिप्रभा शास्त्री, मालती जोशी, नासिरा शर्मा, चंद्रकांता आदि हैं। इन लेखिकाओं के जीवन व साहित्य में नारी विषयक दृष्टिकोण सार्थक तरीके से प्राप्त होता है। इन लेखिकाओं के बीच अपनी लेखन प्रतिभा के कारण डॉ. नीरजा माधव का हिंदी साहित्य में एक चर्चित नाम है। आकाशवाणी में प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्य करते हुए उन्होंने अंग्रेजी विषय में पी-एच. डी. करने के बाद भी हिंदी को अपनी लेखन भाषा के रूप में चुना। इतना ही नहीं बल्कि हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में उन्होंने गंभीर व सार्थक लेखन किया है। इनके उपन्यास व कहानियाँ अनेक प्रदेशों के संस्थाओं के पाठ्यक्रम में शामिल हुए हैं।

नीरजा माधवजी की एक पुस्तक “हिंदी साहित्य का ओझल नारी इतिहास” को मुझे सर्वप्रथम पढ़ने का अवसर मिला। इसके बाद उनकी अन्य रचनाओं का मैंने अध्ययन किया। स्त्री विमर्श पर नीरजाजी के रचना संसार का अध्ययन करना मेरा उद्देश्य था। डॉक्टर नीरजा माधव जी ने बहुत ही सरल, सहज तरीके से अपने साहित्य में समाज में विभिन्न स्तर पर स्त्रियों की आवाज को उठाया है। चार- पांच साल के कठोर परिश्रम, अध्ययन, लेखन व पुनर्लेखन के बाद मैं यह शोध प्रबंध प्रस्तुत कर रहा हूँ। शोध प्रबंध व डॉ. नीरजाजी के कथा साहित्य का सुचारू रूप से अध्ययन करने के लिए इसे निम्नलिखित षष्ठ अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय : नारी विमर्श का स्वरूप

द्वितीय अध्याय : नीरजा माधव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

तृतीय अध्याय : नीरजा माधव के कथा साहित्य में नारी पात्रों का परिचय

चतुर्थ अध्याय : नीरजा माधव की कहानियों में नारी विमर्श

पंचम अध्याय : नीरजा माधव के उपन्यासों में नारी विमर्श

षष्ठ अध्याय : नीरजा माधव के कथा साहित्य मैं शिल्प

संक्षेप में डॉ. नीरजा माधव के कथा साहित्य के विषय में यही कहा जा सकता है कि उनके साहित्य के माध्यम से उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों की स्त्रियों की आवाज को बुलंद किया है। इनके साहित्य में तत्कालीन समाज की स्त्रियों की विभिन्न समस्या को पहचाना जा सकता है। जहाँ तक शोध प्रबंध का प्रश्न है, इसमें डॉ. नीरजा माधव जी के कथा साहित्य में अभिव्यक्त नारी विमर्श के चालू मुहावरों से भिन्न पारंपरिक मूल्यों को चरितार्थ करती आधुनिक नारी के जीवन संघर्ष की कहानी है। इनके साहित्य के अध्ययन से प्रतीत होता है कि नारी मुक्ति का अर्थ पारिवारिक जीवन से मुक्ति नहीं, बल्कि पितृसत्तात्मक मानसिकता की बुराइयों से मुक्ति है।

प्रथम अध्याय स्त्री विमर्श के दर्शन व सिद्धांतों पर आधारित है। इस अध्याय में मैंने स्त्री विमर्श के सामान्य अर्थ व कोश ग्रंथों के अर्थ का विस्तृत रूप प्रस्तुत किया है। स्त्री विमर्श की अवधारणा के संबंध में विमर्श के विविध पहलुओं को प्रतिबिंबित किया गया है। जैसे कि पाश्चात्य स्त्री विमर्श की अवधारणा व भारतीय स्त्री विमर्श की अवधारणा अलग है। दोनों का समाज के लिए एक ही स्त्री सरोकार सही नहीं रहेगा। दोनों चिंतन के परिपेक्ष्य में साहित्य व प्रमुख चिंतकों के विचारों को स्पष्ट किया गया है। भारत के वेदों, रामायण व महाभारत आदि साहित्य में नारी संबंधी चिंतन का अध्ययन किया गया है। मध्य युग में नारियों की स्थिति व बाहरी आक्रमणों के द्वारा थोपी गई पर्दा प्रथा आदि को स्पष्ट किया गया है। इसके बाद अंग्रेजों के शासन काल में स्त्रियों को विभिन्न कुंठित प्रथाओं से निकाला गया था। राजा राममोहन राय, ज्योतिबा फूले, सावित्रीबाई फुले, डॉ आंबेडकर, स्वामी विवेकानंद आदि विचारको के स्त्रीयों के हित के लिए किए गए प्रयासो को दिखाया गया है। नारी को संविधान में प्राप्त अधिकारों की विस्तार से चर्चा की गई है। स्त्री विमर्श का मूल बिंदु जो स्त्रियों को सीधे प्रभावित करता है , जैसे पित्रसत्तात्मक व्यवस्था- में स्त्रियो को समाज के दूसरे दर्जे का माना जाता है। पुरुषवादी सोच की वजह से नारियों को शारीरिक व मानसिक रूप

से कमजोर माना जाता है। उनके पैदा होने से ही उन्हे स्त्री होने की शिक्षा दी जाती है। दूसरा बिंदु है धर्म की सत्ता – इसमें धर्म को लेकर स्त्रियों के साथ भेदभाव किया जाता है। स्त्रियो की प्रगति में धर्म की उपयोगिता का अध्ययन किया गया है। इसी तरह अन्य बिन्दु - लिंग का सवाल, श्रम विभाजन का सवाल, मातृत्व का प्रश्न, देह से मुक्ति आदि को प्रथम अध्याय के अंतर्गत सामिल किया है।

दूसरा अध्याय डॉ नीरजा माधव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन है। नीरजाजी जिला जौनपुर उत्तर प्रदेश में पैदा हुई, उनकी माता बहुत धार्मिक थी। उनके पिता पेशे से अध्यापक थे। पिताजी की पठन-पाठन में गहरी रूचि थी। इसी का प्रभाव डॉ नीरजा माधव पर पड़ा। डॉ॰ नीरजा माधवजी की उच्चशिक्षा वाराणसी में हुई। यहीं पर वह आकाशवाणी में 'प्रशासनिक अधिकारी' पद पर कार्यरत रहकर अपना वैवाहिक जीवन जीते हुए, लेखन कार्य से संबंद्ध रखती हैं। इसमें नीरजाजी के कृतित्व के अंतर्गत सम्पूर्ण साहित्य का पूर्ण अध्ययन किया गया है। कथा साहित्य में उपन्यास, कहानी, कविता संग्रह, निबंध संग्रह का विस्तार से परिचय दिया गया है। उनकी समस्त रचनाओं की सूची प्रस्तुत की गई है। इस अध्याय के अंत में डॉ. नीरजाजी को प्राप्त पुरस्कारों के अलावा उनकी रचनाएँ जो कि विभिन्न संस्थानों के पाठ्यक्रम में शामिल कर अध्ययन- अध्यापन किया जा रहा है इसकी सूची भी दी गई है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत डॉ नीरजा माधव के कथा साहित्य में नारी पात्रों का परिचय के अंतर्गत मैंने उनके सभी आठ कहानी संग्रहो 1.चिटके आकाश का सूरज 2. अभी ठहरो अंधी सदी 3. आदिमगंध तथा अन्य कहानियां, 4. पथदंश 5. चुप चंतारा रोना नहीं 6. प्रेम संबंधों की अन्य कहानियाँ, 7. बाया पांडेपुर चौराहा 8. पत्थरबाज व दस उपन्यासों

1.यमदीप 2. तेभ्यःस्वधा 3. अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी 4. रात्रिकालीन संसद, 5. देनपा : तिब्बत की डायरी, 6. गेशेजम्पा 7. ईहामृग, 8. अनुपमेय शंकर, 9. त्रिपुरा, 10. धन्यवाद शिवनी) का अध्ययन किया है।

इस अध्याय के प्रथम चरण में उनके सभी कहानी संग्रह में से स्त्री विमर्श के सरोकारों से संबन्धित प्रमुख स्त्री पात्रों का परिचय प्रस्तुत किया है। जिसमें चंतारा, हरीतिमा, सुदेशना, नैनावती, कमली, सीमा, रेनू, भारती, सविता,नैना आते हैं। उपन्यास के स्त्री पात्रों के परिचय के क्रम उनके सभी उपन्यासों के अध्ययन के उपरांत स्त्री विमर्श के सरोकारों से संबन्धित चुनिंदा सात उपन्यास के स्त्री पात्रों का परिचय प्रस्तुत किया हैं। इसमें प्रमुख नारी पात्र जैसे कि तेभ्य:स्वधा उपन्यास की मीना शुक्ला, अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी मे भवप्रीता आर्या, यमदीप उपन्यास की मानवी, गेशेजम्पा उपन्यास की देवयानी, ईहामृग उपन्यास की फूलझड़ी व मंजूलरानी, देनपा-तिब्बत की एक डायरी उपन्यास की लोये, रात्रिकालीन संसद की मानसी व अमोदिनी का परिचय दिया गया है। डॉ॰ नीरजा माधव ने समाज के हर स्तर के पात्रों को अपने उपन्यास और कहानी में स्थान दिया है। इसमें ग्रामीण पात्र और महानगरीय संस्कृति के पात्र भी शामिल किए गए हैं।

चतुर्थ अध्याय में नीरजा माधव की कहानियों में स्त्री विमर्श का अध्ययन है। इसमें स्त्री विमर्श के सरोकार से संबंधित कहानियों में प्रयुक्त स्त्री पात्रों के क्रियाकलापों, उनके जीवन की समस्याओं, उनके साथ होने वाले शोषण एवं शोषण के प्रतिकार, अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए स्त्री पात्रो द्वारा किये गये संघर्षों आदि का वर्णन किया गया है। जैसे चंतारा जोकि एक मजदूर है । जिस पर सरूप साव की गंदी नजर है। वह सरूप साव का अपने तरीके से प्रतीकार करती है। किंतु अपने मालिक द्वारा कहे जाने पर अपने दर्द को वह

सह लेती है ,मालिक अपने बच्चे की खुशी के लिए अपने प्रभुत्व से चंतारा को आवाज उठाने से रोक देते है। वह अपना मुँह कपड़े से बंद कर लेती है और चुप होकर अपने बच्चे की तरफ चली जाती है। 'शीर्षक क्या दूं'? कहानी में दो स्त्री पात्र है। जो कि दोनों लेखन कार्य में हैं और दोनों अभिन्न मित्र भी हैं। परंतु दोनों के लेखन की पृष्ठभूमि अलग-अलग है। हरीतिमा भारतीय सभ्यता व संस्कृति के संदर्भ में स्त्री मुक्ति को देखना चाहती है। जबकि सुदेशना पाश्चात्य आयातित विचारों की पोशाक है। लेखिका नीरजा माधव की इसी तरह से 'हव्वा ' कहानी है। जिसमें तीस-पैंतीस साल की नैना नायिका है। वह एक सरकारी दफ्तर में अधिकारी है, उसकी कार्यक्षमता से कार्यालय के लोग जलते हैं। वह हसमुख व सरल स्वभाव की है। ऑफिस के बड़े अधिकारी भी उस पर छींटाकसी करते हैं। वह ऑफिस के लोगों की किसी भी तरह की साजिश को कामयाब नहीं होने देती है एवं भ्रष्टाचार में लोगों का साथ नहीं देती। वह ऑफिस से लेकर अपने घर तक के लोगों की पुरुषवादी मानसिकता से परेशान रहती है।

पंचम अध्याय के अंतर्गत डॉ. नीरजा माधव के उपन्यासों में स्त्री विमर्श का अध्ययन किया गया है। इसमें नारी प्रधान उपन्यास को चिन्हित करके उनसे संबंधित नारी पात्रों का स्त्री विमर्श के संदर्भ में अध्ययन किया है। इसमें मुख्यतः सात उपन्यास में नारी पात्रों की विवेचना की गयी है। प्रथम उपन्यास तेभ्य: स्वधा की नायिका मीना शुक्ला है। जो भारत- पाकिस्तान विभाजन के सांप्रदायिक दंगे में अपने पूरे परिवार को खो देती है। मीना को पाकिस्तानी आतंकियो का सरदार साफ़ी खान उठाकर ले जाता हैं, और उसे अमीना नाम देकर पत्नी की तरह रखना चाहता है, परंतु मीना उसका प्रतिकार करती है। वह पाकिस्तान से काबाइलियो के चंगुल से बार-बार भागने का प्रयास करती है, परंतु कामयाब नहीं होती है। पकड़े जाने पर प्रताड़ित भी होती है। परंतु जब मीना गर्भवती हो जाती है तो उसके विचार

बच्चे को लेकर पहले से भिन्न हो जाते है। वह साफ़ी खान का विरोध तो करती है परंतु अपने बच्चे में अपना अस्तित्व देखने लगती है। अब मीना अपनी लड़ाई में बच्चे को भी जोड़ कर देखने लगती है। दूसरी पात्र है, भवप्रीता जो कि एक दलित-महिला होने के साथ साथ पुलिस कांस्टेबल भी है। समाज की नारी के प्रति मानसिकता को झेलते हुए वह स्वयं सोचती है कि मेरे पुलिस विभाग में रहते हुए मेरे साथ इतना शोषण हो रहा है, तो सामान्य महिला का जीवन तो बहुत मुश्किल होता होगा। भवप्रीता का जीवन संघर्ष से भरा है। वह सामान्य दलित स्त्री है। उसकी संघर्ष गाथा सभी के लिए प्रेरणा दायी है। नीरजाजी का यह दलित स्त्री को लेकर लिखा गया उपन्यास हिन्दी साहित्य के लिए अनुपम कृति है। 'यमदीप' उपन्यास में पत्रकार मानवी है जो कि शहर के बड़े-बड़े गुंडों, नेताओं, मंत्री, अधिकारियों के खिलाफ लड़ाई लड़ती है। वह शहर के नारी सुधार गृह में हो रहे स्त्रियों के शोषण को रोकने के लिए संघर्ष करती है। 'गेशेजम्पा' व 'देनपा-तिब्बत की डायरी' उपन्यास में लेखिका ने विश्व स्तर पर नारी की आवाज को बुलंद किया है। इसमे तिब्बत से विस्थापित हुए लोगो की कथा कही गयी है। विस्थापन के उपरांत स्त्रियों के साथ होने वाली समस्याओ को प्रतिबिम्बित किया गया है, क्यूंकि बच्चे व पुरुष घर से निकल कर अपना जीवन यापन करते है ,परंतु ज्यादातर स्त्रीयाँ वही रुक कर सब कुछ सही होने की उम्मीद में रह जाती है और चीनी सेनाओं से प्रताड़ित होती है। उन लोगो से दोगुना लगान माँगा जाता है , न देने पर जेल मे बंद कर दिया जाता है। न्हीं चीनी प्रताड़नाओं को उजागर करता लेखिका का यह एक यथार्थवादी उपन्यास है। इसी तरह से विभिन्न पात्रों के द्वारा नीरजाजी समाज की आवाज को उठाती है, और समस्या का समाधान भी दिखाती हैं। उनकी कहानियों व उपन्यासों में नारी पात्र कमजोर नहीं मिलते बल्कि शोषण व अन्याय का प्रतिकार करते है।

षष्ट अध्याय में नीरजा माधव के कथा साहित्य के शिल्प के अध्ययन के क्रम में इनकी कहानियों और उपन्यासों में चुनिंदा बिंदुओं पर शिल्प का अध्ययन किया गया है। साहित्य में कथ्य और शिल्प प्रमुख तत्व होते है। कथ्य के अंतर्गत भावपक्ष का अध्ययन किया जाता है। जबकि शिल्प पक्ष के अंतर्गत साहित्य के कलापक्ष का अध्ययन किया जाता है। रचनाओं के कलापक्ष के अंतर्गत रचना के विविध तत्त्वों का अध्ययन किया गया है। जैसे भाषा, तत्सम् शब्द, अंग्रेजी के शब्द एवं वाक्य, उर्दू अरबी और फारसी शब्द, अवधी भोजपुरी और स्थानीय बोलियों के शब्द एवं वाक्य, पात्रानुकुल भाषा, मुहावरे और कहावतें, गीत लोकगीत और काव्य, और लेखनशैली। इन सब बिंदुओं पर उपन्यास, कहानी में प्रस्तुत शिल्प कौशल का अध्ययन किया गया है।

और अंत में प्रस्तुत शोध प्रबंध के सभी अध्यायो के निष्कर्ष को स्पष्ट रूप से उपसंहार के माध्यम से दिया गया है। उपसंहार के बाद मैंने शोधकार्य के उपयोग में लिए गए मुख्य ग्रंथ और सहायक ग्रंथो की सूचि दी है। इस अध्ययन से यह विदित होता है कि आधुनिक युग की बहुचर्चित लेखिका डॉ. नीरजा माधव के कथा साहित्य में चित्रित स्त्री विमर्श पर अध्ययन के आरंभ में जो जिज्ञासा थी उन सब का समाधान मुझे इस शोध कार्य से प्राप्त हुआ है। जो कि इस उपसंहार में दिए गए हैं।

यह शोध प्रबंध मैं सभी के आशीर्वाद से प्रस्तुत कर रहा हूँ। जिन के सहयोग के बिना मैं यह कार्य नहीं कर सकता था। उनमें सर्वप्रथम मैं मेरे शोध निर्देशक डॉ॰ मनीषा ठक्कर मैडम को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूँ, जिन्होंने शिष्य रूप में मेरा स्वीकार कर मुझे उपकृत किया और हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया। उसके बाद मैं विभागाध्यक्ष प्रोफेसर कल्पना गवली मैडम को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूं जिनके सहयोग व उत्साहवर्धन के बिना यह कार्य संभव नहीं था। पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर दक्षा मिस्त्री मैडम को मैं कैसे विस्मृत

कर सकता हूँ, जिन्होंने कदम-कदम पर मेरी सहायता की । विभाग के अन्य अध्यापको में प्रोफेसर दीपेन्द्रसिंह जाडेजा सर, डॉ॰ एस. एस. परमार सर,डॉ अज़हर ढेरीवाला सर आदि का मैं हृदय पूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया, और मैं उनके मार्गदर्शन से लाभान्वित हुआ इस अवसर पर मैं उन सभी को धन्यवाद ज्ञापित करता हूं । मैं विभाग के उन सभी अध्यापकों का आभार व्यक्त करता हूँ जिनसे मुझे किसी ना किसी प्रकार से सहायता प्राप्त हुई है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के लिए मैंने अनेकानेक विद्वानों के ग्रंथों का सहारा लिया, उन सब के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ । अंत में 'साक़ी अमरोहवी' की इस गज़ल की कुछ पंक्तियों से समापन करना चाहता हूँ ।

"मंज़िलें लाख कठिन आए गुजर जाऊँगा

हौसला हार के बैठुँगा तो मर जाऊँगा ।

चल रहे थे मेरे साथ कहाँ है वो लोग

जो ए कहते थे कि रास्ते में बिखर जाऊंगा ।

लाख रोकें ये अंधेरे मेरा रास्ता लेकिन

मै जिधर रोशनी जाएगी उधर जाऊँगा ।"

****